

प्रस्तावना

मौर्य काल (322 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व) भारतीय इतिहास में न केवल राजनीतिक एकीकरण का युग था बल्कि कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में भी एक नए अध्याय की शुरुआत थी। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित इस साम्राज्य ने विशेष रूप से सम्राट अशोक के शासनकाल में कला और स्थापत्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास देखा। मौर्य कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी पत्थर का व्यापक उपयोग, जो भारतीय इतिहास में प्रथम बार इतने बड़े पैमाने पर हुआ। अशोक के स्तंभ, स्तूप और गुफा स्थापत्य मौर्य काल की कलात्मक उत्कृष्टता के जीवंत प्रमाण हैं जो आज भी भारतीय कला परंपरा के आधार स्तंभ माने जाते हैं।

मौर्य कला की सामान्य विशेषताएं

मौर्य कला की प्रमुख पहचान इसकी भव्यता, चमक और तकनीकी पूर्णता थी। पत्थर की पॉलिश जिसे "मौर्य पॉलिश" कहा जाता है, इतनी उत्कृष्ट थी कि आज भी इसकी चमक बरकरार है। इस काल में चुनार और मथुरा के बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग हुआ। मौर्य कला में फारसी प्रभाव भी दिखाई देता है विशेष रूप से स्तंभों की शैली में, परन्तु भारतीय तत्वों का समावेश इसे विशिष्ट बनाता है। कला का उद्देश्य केवल सजावटी नहीं बल्कि धर्म प्रचार और शासकीय संदेश प्रसारित करना भी था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए कला को एक प्रभावी माध्यम बनाया।

स्तंभ स्थापत्य की विशेषताएं

→ संरचनात्मक विशेषताएं

अशोक के स्तंभ मौर्य स्थापत्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। पूरे साम्राज्य में लगभग 30 से अधिक स्तंभ स्थापित किए गए थे जिनमें से आज केवल 19 ही बचे हैं। ये स्तंभ सामान्यतः 40 से 50 फीट ऊंचे थे और एक ही पत्थर से तराशे जाते थे। प्रत्येक स्तंभ तीन भागों में विभाजित है। सबसे नीचे स्तंभ शाफ्ट होता है जो एक लंबा बेलनाकार खंभा है। इसके ऊपर घंटाकार आधार या कैपिटल होता है जिस पर कमल की पंखुड़ियां उकेरी जाती थीं। सबसे ऊपर पशु आकृतियां स्थापित होती थीं जैसे सिंह, हाथी या बैल।

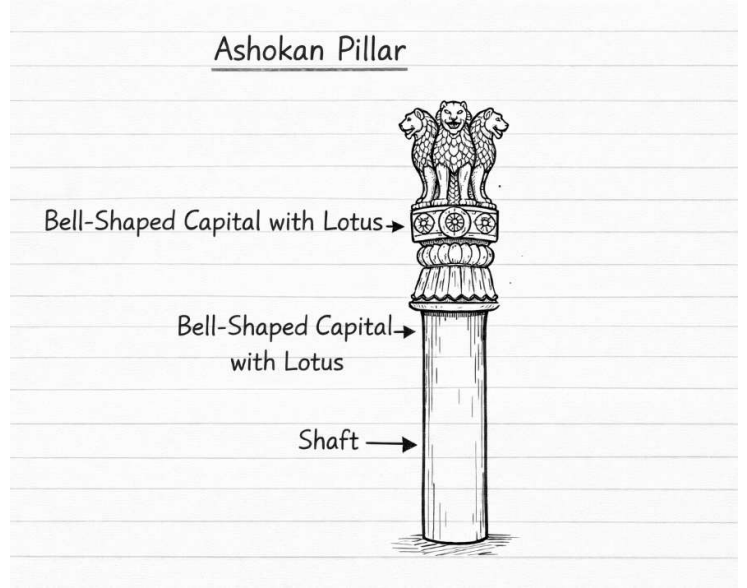
→ सारनाथ का सिंह स्तंभ

सारनाथ का सिंह स्तंभ मौर्य कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है जिसे आज भारत के राष्ट्रीय चिह्न के रूप में अपनाया गया है। इसमें चार सिंह पीठ से पीठ सटाकर चारों दिशाओं में मुंह किए खड़े हैं। सिंहों के नीचे एक वृत्ताकार फलक पर चार पशु उकेरे गए हैं - सिंह, हाथी, बैल और घोड़ा। इन चार पशुओं के बीच में चार चक्र बने हैं जो धर्मचक्र का प्रतीक हैं। पूरी संरचना में कलात्मक संतुलन और तकनीकी परिपूर्णता

दिखाई देती है। सिंहों की मांसपेशियां, बालों की बनावट और शारीरिक अनुपात इतने यथार्थवादी हैं कि ये जीवंत प्रतीत होते हैं।

→ अन्य महत्वपूर्ण स्तंभ

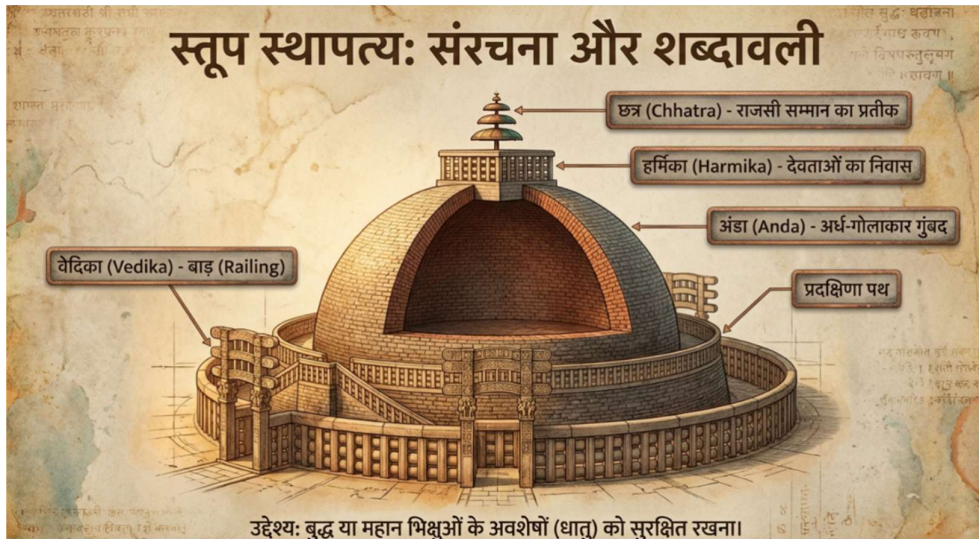
लौरिया नंदनगढ़ का स्तंभ जो आज भी अपनी मूल स्थिति में खड़ा है, तकनीकी उत्कृष्टता का प्रमाण है। रामपुरवा के स्तंभ पर बैल की आकृति अत्यंत जीवंत है। सांची और सारनाथ के स्तंभों पर अशोक के धर्म लेख उत्कीर्ण हैं जो ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। ये स्तंभ केवल कलात्मक नहीं बल्कि ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं। प्रत्येक स्तंभ पर की गई पॉलिश इतनी उत्कृष्ट है कि आज भी दर्पण जैसी चमक दिखाई देती है।



स्तूप स्थापत्य की विशेषताएं

→ स्तूप की संरचना और उद्देश्य

स्तूप बौद्ध स्थापत्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। यह मूलतः बुद्ध या किसी महान बौद्ध भिक्षु के अवशेष (धातु) को सुरक्षित रखने के लिए बनाया जाता था। स्तूप अर्ध-गोलाकार संरचना है जिसे अंडा (अंडाकार गुंबद) कहा जाता है। इसके ऊपर एक चौकोर हर्मिका होती है जिससे छत्र या छत्री निकलती है। पूरे स्तूप के चारों ओर वेदिका (रेलिंग) होती है और चार दिशाओं में तोरण द्वार बने होते हैं। स्तूप के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ बना होता है जहाँ श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं।



→ सांची का महान स्तूप

सांची का स्तूप मौर्य काल में अशोक द्वारा निर्मित किया गया था हालांकि बाद के काल में इसका विस्तार हुआ। मूल मौर्य स्तूप ईट का बना था जिसकी ऊंचाई लगभग 60 फीट थी। इसमें बुद्ध के अवशेष रखे गए थे। स्तूप की सादगी और भव्यता दोनों ही प्रभावित करते हैं। चारों ओर की रेलिंग पत्थर की बनी है और इस पर कोई अलंकरण नहीं है जो मौर्य काल की सरल शैली को दर्शाता है। बाद में शुंग और सातवाहन काल में इस पर अलंकृत तोरण द्वार जोड़े गए।

प्रमुख स्तूप: सांची और अन्य



सांची स्तूप (Sanchi Stupa):

- निर्माण: मूल रूप से अशोक द्वारा ईंटों से निर्मित, बाद में विस्तार हुआ।
- विशेषता: सादगी और भव्यता। मौर्य काल में रेलिंग (वेदिका) सादी थी, कोई अलंकरण नहीं था।

अन्य प्रमुख स्तूप (Other Key Stupas):

- भरहुत: मौर्य कालीन महत्वपूर्ण उदाहरण।
- धमेख (सारनाथ): जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया।
- पिप्रहवा: जहाँ बुद्ध के अवशेष मिले।

→ अन्य महत्वपूर्ण स्तूप

भरहुत का स्तूप भी मौर्य काल का महत्वपूर्ण उदाहरण है। धमेख स्तूप सारनाथ में स्थित है जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था। पिप्रहवा का स्तूप जहाँ बुद्ध के अवशेष मिले थे, भी इसी काल का माना जाता है। ये सभी स्तूप बौद्ध धर्म के प्रसार में अशोक की भूमिका को रेखांकित करते हैं।

गुफा स्थापत्य की विशेषताएं

→ बराबर की गुफाएं

मौर्य काल में पत्थर को काटकर गुफाओं का निर्माण एक महत्वपूर्ण विकास था। बिहार के गया जिले में बराबर की पहाड़ियों में सात गुफाएं हैं जिन्हें अशोक और उसके पोते दशरथ ने आजीवक संप्रदाय के तपस्वियों के लिए बनवाया था। इन गुफाओं में लोमश ऋषि, सुदामा, विश्व झोपड़ी और कर्ण चौपड़ प्रमुख हैं। प्रत्येक गुफा में दो कक्ष होते हैं - एक आयताकार सभा कक्ष और दूसरा वृत्ताकार पूजा कक्ष।

→ तकनीकी उत्कृष्टता

बराबर गुफाओं की सबसे आश्चर्यजनक विशेषता इनकी आंतरिक पॉलिश है। पत्थर को इतनी बारीकी से तराशा और पॉलिश किया गया है कि दीवारें दर्पण जैसी चमकती हैं। गुफाओं के प्रवेश द्वार पर मेहराब

बने हैं जो भारतीय स्थापत्य में प्रारंभिक उदाहरण हैं। लोमश ऋषि गुफा के प्रवेश द्वार पर लकड़ी की झोपड़ी की नकल करते हुए डिजाइन बनाया गया है जिस पर हाथियों की पंक्ति उकेरी गई है। यह दर्शाता है कि प्रारंभिक काल में लकड़ी की स्थापत्य शैली को पत्थर में उतारा गया।

→ गुफाओं का धार्मिक महत्व

ये गुफाएं भिक्षुओं के निवास और ध्यान के लिए बनाई गई थीं। वर्षा ऋतु में जब भ्रमण करना कठिन होता था तब भिक्षु इन गुफाओं में रहते थे। गुफाओं में उत्कीर्ण अभिलेखों से पता चलता है कि अशोक ने इन्हें आजीवकों को समर्पित किया था। यह अशोक की धार्मिक सहिष्णुता को भी दर्शाता है कि उसने बौद्ध होते हुए भी अन्य संप्रदायों के लिए भी व्यवस्था की।

मौर्य मूर्तिकला

→ यक्ष और यक्षिणी मूर्तियां

मौर्य काल में यक्ष और यक्षिणी की विशाल प्रतिमाएं बनाई गईं। दीदारगंज की यक्षिणी मूर्ति जो पटना संग्रहालय में है, मौर्य मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। यह लगभग 6.5 फीट ऊंची है और चुनार बलुआ पत्थर से बनी है। मूर्ति की पॉलिश अद्भुत है और शारीरिक अनुपात पूर्णतः सटीक हैं। बेसनगर का यक्ष, पारखम का यक्ष और अन्य यक्ष मूर्तियां भी इसी काल की हैं। इन मूर्तियों में यथार्थवाद और आदर्शवाद का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है।



मूर्ति शिल्प: यक्ष और यक्षिणी

दीदारगंज यक्षिणी:

- विवरण: पटना संग्रहालय में स्थित, 6.5 फीट ऊंची, चुनार बलुआ पत्थर से निर्मित।
- विशेषता: 'मौर्य कला की मोना लिसा'।
- शिल्प: पूर्ण शारीरिक अनुपात, अद्भुत पॉलिश, और चंवर (Flywhisk) धारिणी।

संदर्भ:

- यह 'लोक कला' (Popular Art) का प्रतिनिधित्व करती है।
- अन्य उदाहरण: पारखम का यक्ष, बेसनगर का यक्ष।

→ पशु मूर्तिकला

मौर्य काल में पशु मूर्तियां अत्यंत जीवंत और यथार्थवादी हैं। रामपुरवा के सांड, सारनाथ के सिंह, और सांची के हाथी इसके उदाहरण हैं। पशुओं की मांसपेशियों, त्वचा की सिलवटों और भावों को इतनी

कुशलता से उकेरा गया है कि वे जीवित प्रतीत होते हैं। यह मूर्तिकारों की असाधारण प्रेक्षण क्षमता और तकनीकी दक्षता को दर्शाता है।

मौर्य कला में विदेशी प्रभाव

मौर्य कला में फारसी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अशोक के स्तंभों की घंटाकार पूंजी फारसी स्तंभों से मिलती जुलती है। पर्सेपोलिस के स्तंभों से समानता देखी जा सकती है। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि मौर्य साम्राज्य और फारस के बीच राजनीतिक और व्यापारिक संबंध थे। हालांकि भारतीय कलाकारों ने इन तत्वों को अपनी शैली में ढालकर पूर्णतः भारतीय रूप दे दिया। कमल की पंखुड़ियां, धर्मचक्र और बुद्ध से संबंधित प्रतीक पूर्णतः भारतीय हैं।



मौर्य काल में कला का उद्देश्य

मौर्य कला केवल सौंदर्यात्मक नहीं थी बल्कि इसका राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्य भी था। अशोक ने कला को धर्म प्रचार का माध्यम बनाया। स्तंभों पर उत्कीर्ण धर्म लेख जनता को नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। स्तूपों का निर्माण बौद्ध धर्म को लोकप्रिय बनाने के लिए किया गया। कला के माध्यम से साम्राज्य की शक्ति और वैभव का प्रदर्शन भी होता था। विशाल स्तंभ और स्तूप मौर्य सत्ता की भव्यता के प्रतीक थे।

निष्कर्ष

मौर्य काल भारतीय कला और स्थापत्य के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है। इस काल में पहली बार पत्थर का इतने बड़े पैमाने पर उपयोग हुआ और ऐसी तकनीकी उत्कृष्टता हासिल की गई जो आज भी आश्चर्यचकित करती है। अशोक के स्तंभ केवल कला के नमूने नहीं हैं बल्कि धर्म, नैतिकता और शासन

के संदेश वाहक भी हैं। स्तूप स्थापत्य ने बौद्ध धर्म को दृश्य रूप प्रदान किया और गुफा स्थापत्य ने भारतीय रॉक-कट परंपरा की नींव रखी।

मौर्य कला की विशेषताएं - यथार्थवाद, तकनीकी परिपूर्णता, स्मारकीय आकार और उत्कृष्ट पॉलिश - इसे अद्वितीय बनाती हैं। विदेशी प्रभावों को ग्रहण करते हुए भी इसने अपनी मौलिकता बनाए रखी। सारनाथ का सिंह स्तंभ आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है जो मौर्य कला की कालजयी महत्ता को रेखांकित करता है।

समकालीन संदर्भ में मौर्य कला हमें सिखाती है कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन और मूल्य प्रसार का शक्तिशाली माध्यम हो सकती है। अशोक ने कला के माध्यम से अहिंसा, सहिष्णुता और धर्म का संदेश फैलाया। आज जब हम अपनी सांस्कृतिक विरासत की बात करते हैं तो मौर्य कला उसका अभिन्न अंग है। यह हमारी पहचान और गौरव का प्रतीक है जो भारतीय सभ्यता की प्राचीन समृद्धि और उत्कृष्टता को दर्शाता है।